हिंदी विभाग

विभागीय संपादक

प्रा.डॉ. साहेबराव गायकवाड

हिंदी विभाग

अनुक्रमणिका

* हिंदी कहानी साहित्य में आदिवासी जीवन व संवेदना	- प्रा.डॉ. साहेबराव गायकवाड (हिंदी विभाग)	.... ७६
* गाँधीवाद और आधुनिक हिंदी साहित्य	- प्रा. दिपाश्री कैलास गडाख (हिंदी विभाग)	.... ७९
* प्रेमचंद के उपन्यासों में दलित विमर्श	- प्रा. गोरख बी. इदे (हिंदी विभाग)	.... ८२
* हिंदी साहित्य, सिनेमा और समाज	- प्रा. एस.डी. गावंडे (पदव्युत्तर विभाग (हिंदी विभाग))	.... ८३
* दोस्ती	- कु. गायत्री भाऊसाहेब शिर्के (एफ.वाय.बी.कॉम)	.... ८५
* एक थी लड़की	- कु. गायत्री भाऊसाहेब शिर्के (एफ.वाय.बी.कॉम)	.... ८६
* अच्छे दिन आते है ।	- तुषार दत्तात्रय ढोले (एफ.वाय.बी.एस्सी)	.... ८६
* कहानी जिन्दगी की	- कु. आश्विनी प्रभाकर मंडलिक (एफ.वाय.बी.कॉम.)	.... ८७
* जीवन की लड़ाई ।	- तुषार दत्तात्रय ढोले (एफ.वाय.बी.एस्सी.)	.... ८७
* शिक्षक	- कु. सलमा हसन सय्यद (१२ वी कला)	.... ८८
* आकाश की तुलना मानव से	- तुषार दत्तात्रय ढोले (एफ.वाय.बी.एस्सी.)	.... ८८

हिंदी कहानी साहित्य में आदिवासी जीवन व संवेदना

प्रा.डॉ. साहेबराव गायकवाड
(हिंदी विभाग)

आज का युग प्रगति, विज्ञापन, विज्ञान तंत्रज्ञान का युग भले ही लेकिन बुनियादीतौर पर आदिवासियों के जीवन में जबतक परिवर्तन नहीं होता वे जब तक प्रगति की सीढियों को पार नहीं करते तब तक हमारा विकास अधुरा है ।

'संवेदना' मूल रुप से मनुष्य की मानसिक स्थितियों के साथ जुड़ी हुई है। साहित्य के क्षेत्र में संवेदना का अर्थ ''सुख-दुख आदि की प्रतितियाँ अनुभूति है।'' साहित्यकार एक संवेदनशील प्राणी होता है। संवेदनशीलता के कारण ही किसी व्यक्ति के सुख-दुख को अनुभूत कर उसके अंदर जो एक वैचारिक भूमिका बनती है, वही सृजन के धरातल से गुजर कर साहित्य का रुप ले लेती है। साधारणतः संवेदना का सहज अर्थ होता है स-वेदना।

हिंदी कहानी साहित्य में आदिवासी यों के सुखःदुख तथा वेदनाओं पर विचार विमर्श होना आवश्यक है।

आदिवासी की एक अलग दुनिया होती हैं। उसकी उस दुनिया में पेड़ हैं, पौधे हैं, नदियाँ हैं, नाले, झरने हैं। पर्वत, पहाड़, वन और वन्य जीवन उसके सच्चे मित्र है। शिकार कंदमूल, फल, महुआ, कोदई, साँवा, भेड-बकरी चराकर मेहनत-मजदूरी करके सुरज के अस्तीचल गामी होने के साथ अपनी दिनभर की थकान मिटा देने के लिए रुखा-सूखा खाकर थककर रैन बसेरा करना उसकी नियति है।

साधारणतः आदिवासी लोग या समाज गाँव या बस्ती को छोड़कर जीवन निर्वाह के लिए दूर घने जंगलों के बीच या नदी किनारे, पहाडी की चोटी पर या पहाड़ी की तलहटी पर रहा करते हैं। शिकार कर अपना जीवन गुजारा करना या फिर लकड़ी वनौषधियाँ, शहद आदि इकठ्ठा कर गावों और शहरों में बेचना इनका व्यवसाय है। गाय बकरी का दूध, मुर्गी के अंडे, भेडों के बाल बेचकर पैसा कमाना, बारीश पर अवलंबित चावल जैसे धान पैदा कर शहरी लोगों को बेचना व सालभर परिवार का गुजारा हो सके ऐसी व्यवस्था करके वर्तमान में इन आदिवासीयों की नियति बन गई हैं। शहर, गाँव, कस्बे के संपर्क से दूर इन आदिमजातियों की वेशभूषा, अलंकार, संस्कृति आदि विभिन्न प्रकार की होती है।

आदिवासियों की आशा-आकांक्षाएँ अधिक न होने के कारण वे केवल वर्तमान में ही जीते हैं। भूत और भविष्य का विचार नहीं करते। आदिवासी लोक तन और मन से सदृढ होते हैं। इनका कारण यह है कि, बचपन से ही विविध आपत्तियों, वेदनाओं, संकटों का सामना करते है । वे निडर, साहसी व मानसिकता से सदृढ होते हैं।

हिंदी कहानी साहित्य में आदिवासियों का जीवन संवेदना के साथ प्रतिबिंबित हुआ हैं।

राकेशकुमार सिंह द्वारा लिखित 'अरण्य रात्रि की महक' कहानी २००३ में प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत कहानी में आदिवासियों के जनजीवन में व्याप्त अंधविश्वास पर प्रकाश डाला है। समाज में व्याप्त अंधविश्वास एक प्रकार से वेदना का ही कारण होता है। इस कहानी का प्रमुख पात्र कोयली मुंडा है। कोयली का मित्र फौजासिंह है। कोयली

की पत्नी भी है। उसके बेटे का नाम डोनका है। कहानी के सभी पात्रों के नाम आदिवासी परिवेश से सम्बन्धित है।

प्रस्तृत कहानी का नायक कोयली मुंडा गरीब है। वह अंधविश्वासी है। वह अपने बेटे के स्वास्थ के लिए मन्नते माँगता है। फौजासिंह उसे कहता है, ''अंध विश्वासी रहना अच्छी बात नहीं है।'' वह कहता है, ''फिर हमें गँजेड़ी बाबा की मठिया में घुसने क्यों नहीं देता पुजारी?'' अपनी मठिया के सामने नाचन के लिए हमें भले बुला लें सादान लोग पर हम मठिया की सीमा भी छू दें तो पाप लगता हैं।

जंगली आदिवासी लोग भोले होते है। बाबा भगत देवी देवताओं के बारे में तो और भी संवेदनशील होते है । धाम पर देवता गंजेड़ी बाबाने कितने लोगों की मन्नते पूरी की है, इस की जानकारी किसी को नही है। लेकिन लोग धाम पर सिक्के फेंकते है। इसी कारण फेंके गये सिक्को से बहुत लोगों का फल-फूल, नारियल बेचने का रोजगार प्राप्त हुआ हैं । वहाँ पर लोगों को गाँजे का प्रसाद दिया जा रहा है । धाम पर जाते समय कोई देख न लें, इसीलिए नायक और उसकी पत्नी कम्बल ओढकर जाते है।

प्रस्तृत कहानी में धर्म के नाम पर होनेवाले शोषण पर लेखक ने प्रकाश डाला है। अशिक्षा के कारण लोग अंधविश्वास के शिकार बन जाते है। इस पक्ष पर लेखक ने अपनी कलम चलायी है।

परंतु केवल आदिवासीयों की वेदना, संवेदना पर चार दीवारीयों में शिक्षित लोगों के बीच विचार-विमर्श करने से आदिवासियों की समस्यायें हल नहीं होगी, तो उनके बीच जाकर उनका ब्रेनवॉश करने की आवश्यकता है । और यह काम हमारे जैसे शिक्षितों का है।

लेखक विजय द्वारा लिखित 'जंगल का सपना' सन २००३ में प्रकाशित कहानी है। कहानी की नायिका अंजी है। नायक अन्होर है। जंगल बहुत सुंदर है। नायिका को जंगल बहुत अच्छा लगता है। नायिका आदिवासी लोगों की व्यथा बताती है। एक महिना पहले जंगल विभाग के अधिकारीयों को जंगल से निकाल दिया है। उनके विरोध में आदिवासी लोग आंदोलन चलाते हैं। वे अपनी संस्कृति को मजबूत बनाए रखना चाहते हैं।

अन्होर स्कूल चलाता है । यह बात उसके काका को बिलकूल पसंद नहीं है। उसके काका सिमोर कहते है नुरही गाँव में गोंड राजा था। वहाँ पर जंगल अच्छा था लेकिन अंग्रेज लोगों ने जंगल पर अधिकार ग्रहन किया है। अंग्रेज लोग आदिवासी लोगोंका शोषण करते है। जंगल की जगह पर तहसील कार्यालय की मंझिल बन गई, बांध बन गया। वहाँ पर लोगों को आदिवासीयों को झोपडी के बदले ईंट, सिमेंट के घर सरकार उपलब्ध कर देना चाहती है। वहाँ पर सरकार जड़ी-बूटियों की कंपनी खोलना चाहती है। इस प्रकार से वहाँ पर परिवर्तन हो रहा है। लेकिन आदिवासी लोग इसका विरोध करते हैं। आदिवासी लोग जंगल को ही अपने जीवन का आधार मानते है। आदिवासी लोगों का जीवन जंगल से ही है। सरकारी अधिकारी लोग आदिवासी यों का जीने का सहारा ही छीन रहे हैं। आदिवासी संस्कृतिपर सरकारी विभागों के अधिकारियों का दमन यह प्रमुख समस्या इस कहानी में चित्रित की गई है।

आदिवासियों का अपना अस्तित्व, अपनी आस्था, व्यथा-वेदना-संवेदना सब कुछ अपनी मिट्टी, अपनी जमिन, अपने घर-मकान, परिवेश से जुडी रहती है, और सरकारी अधिकारी इनका अस्तित्व ही मिटाना चाहते है। आदिवासियों की चिख-पुकार सुननेवाला कोई नहीं होता, उनकी वेदना तथा संवेदना को जाननेवाला, समझनेवाला कोई नहीं होता, उनकी वेदना तथा संवेदना को परखनेवाला कोई फरिश्ता आ जाये।

लेखक जयशंकर द्वारा लिखित 'भुर मुंडा' सन २००३ में प्रकाशित कहानी है। यह कहानी आदिवासी जन-जीवन से संबंधित है। भूरमुंडा गाँव में एक शिव का मंदिर है। वहाँ पर किसी पीर की मजार भी है। जिसके भक्त गणों में हिन्दू-मुस्लिम धर्मों के लोग हैं। जिसके माध्यम से लेखक ने हिंदू-मुस्लिम एकता के पक्ष पर प्रकाश डाला है।

इस कहानी में आदिवासी जन-जीवन में व्याप्त धार्मिक विश्वासोंका सुन्दर चित्रण किया है। नायिका अपने जीवन की व्यथा बता रही है। उसके पिता जी को दिल का दौरा पड़ा था। उनकी सेवा करने के लिए अस्पतांल में रहती है। नायिका साँवली का हमेशा ख्याल रखती है। नायिका अपने प्रेमी को दिलों-जान से चाहती है। लेकिन किसी कारण वश वह अपने प्रेमी के साथ विवाह नहीं कर सकती । नायिका कभी-कभी अपने प्रेमी की यादों में खो जाती है । तो कभी भूरमुंडा के आदिवासी जनजीवन का चित्रण आया है। इस कहानी में अविवाहित रहने की समस्या, का सुन्दर चित्रण हुआ है।

इस प्रकार सारांशतः कहा जाए तो हिंदी कथा साहित्य में आदिवासियों का समग्र जीवन, अन्याय,

अत्याचार शोषण का चित्रण अत्याधिक मात्रा में दिखाई देता है। पिछड़ापन, नारीशोषण, आर्थिक शोषण, अज्ञान, अंधश्रद्धा, असुरक्षा आदि का भी चित्रण मिलता है। आदिवासी लोगों का आर्थिक आधार के लिए पशु-पालन, मुर्गी पालन, शहद बेचना, लकडी बेचना, फल-फूल, जड़ी-बुटी तथा दवाइयों आदि पर निर्भर रहते हैं। परंतु आज इको सेन्सेटिव्ह झोन के कारण आदिवासी आर्थिक स्थिति से लड़ रहा है। समकालीन कथा साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन में स्वाधीनता के बाद भी आवश्यक विकासात्मक परिवर्तन नहीं हुआ है।

कहानीकारों ने एक ओर आदिवासी लोगों की विविध समस्याओं को उद्घाटित किया है तो दूसरी ओर परिवर्तन के लिए शिक्षा का महत्त्व बताया है। आदिवासी नायक-नायिका द्वारा आदिवासी चेतना का संदेश भी कथा कारों ने दिया है। समाज से बहुत दूर, गाँवों से बहुत दूर शहरों से बहुत दूर इन जंगली आदिवासी लोगों को कहानी का नायक-नायिका बनवाकर लेखकोंने आदिवासियों को एक प्रकार से न्याय ही दिया है। ऐसे लेखक निश्चित धन्यवाद के पात्र हैं। आज इक्कीसवीं सदी की देहरी पर खड़ी हिंदी कहानी के ऐसे सुखद बदलाव इस बात की आशा जगाते है कि कहानी का यह गतिशील प्रवाह नयी सदी में बाजारवाद एवं उपभोक्तावाद के मध्य अपने नये गंतव्यों की तलाश करने में सक्षम होगा।

संदर्भ-सूची :

१. आधुनिक हिंदी साहित्य विविध परिदृश्य
– डॉ. पंडित बने
२. समकालीन हिंदी कहानी और २१ वीं सदी की चुनौतियाँ
– सं.डॉ. इन्दुमती सिंह
३. इक्कीसवीं सदी की कहानियों का अनुशीलन
– आश्विनी रमेश काकडे.

* * *

शिक्षा सबसे अच्छी मित्र है । एक शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मान पाता है, शिक्षा सौदर्य और यौवन को परास्त कर देती है ।

– चाणक्य

ये हमारा कर्तव्य है की हम अपणी स्वतंत्रता का मोल अपने खून से चुकाएं, हमे अपनी बलिदान और परिश्रम से जो आजादी मिले, हमारे अंदर उसकी रक्षा करने की ताकत होनी चाहिए ।

– सुभाषचंद्र बोस

जीवन ठेहराव और गति के बीच का संतुलन है ।

– ओशो

गाँधीवाद और आधुनिक हिंदी साहित्य

प्रा. दिपाश्री कैलास गडाख
हिंदी विभाग

गाँधीवाद – परिभाषा एवं स्वरुप–

महात्मा गाँधी भारत के मुक्तिदाता और विश्व के महान चिंतक थे । उन्होंने भारतीय विचारधारा में युगांतर स्थापित किया है । वे स्वयं एक प्रभावपूर्ण साहित्यकार थे। उनका स्पष्ट मत था कि साहित्य वह है जिसे चरस खींचता हुआ किसान समझ सके और साक्षर भी वे साहित्य के लोकोपयोगी रुप के पक्षधर थे ।

गाँधी दर्शन को गाँधीवाद और गाँधी चिंतन के नाम से भी अभिहित किया गया है । वास्तव में गाँधी दर्शन सर्वथा मौलिक नही है । प्रत्युत वह भारत की दार्शनिक सांस्कृतिक तथा अध्यात्मपरक परिपाही का परिस्कृत तथा अनुनातन संस्करण है । गाँधी जी मूलतः दार्शनिक कम और कर्मयोगी अधिक थे उनके जीवन दर्शन को ही गाँधीवाद की संज्ञा दी गई है ।

गाँधी दर्शन का व्यावहारिक पक्ष बडा विस्तृत है । वह स्वदेशी के सिद्धांत से अनुप्रेरीत है उनका अठराह सुत्री रचनात्मक कार्यक्रम सत्याग्रह – युद्ध का प्रधान अंग था आर्थिक समानता, खादी तथा ग्रामोद्योग का विकास इत्यादी के द्वारा उन्होंने कार्यक्रम के आर्थिक पक्ष को उभारा है। सामाजिक पक्ष के अंतर्गत उन्होंने सांप्रदायिक सौहार्द्र को अत्यावश्यक माना इसी प्रकार अस्पृश्यता – निवारण, नारी जागृती, किसान – मजदूर – विद्यार्थी संगठन, समाजसेवा, सफाई आदी को उन्होंने हमारे समक्ष सशक्त रुप में प्रस्तुत किया शिक्षा – संबंधी भाग बुनियादी शिक्षा, मातृभाषा – महत्त्व आदी से सम्पुष्ट है।

इसप्रकार सर्वपुष्ट, सर्वसमन्वित तथा सर्वतोमुखी भाषाओं का संवहन करके गाँधी – दर्शनने हमारे साहित्य को नयी दिशाएँ और अभिनय आधार प्रदान किये।

गाँधीवाद और हिंदी कविता –

आयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔंध' के 'प्रियप्रवास' को खडीबोली के प्रथम महाकाव्य है। यह सन १९१४ ई.में. लिखा गया जब कि गाँधी जी का दक्षिण अफ्रीका का प्रयोगशील जीवन भारत में अपनी पृष्ठभूमि के निर्माण में प्रविष्ठ हो रहा था।

'प्रियप्रवास' गाँधी जी व्यक्तित्त्व से सर्व था अछुता नही है 'हरिऔंध' के 'श्रीकृष्ण' गाँधीवाद की अहिंसा से प्रभावित होकर भी दुष्टों के दमन का समर्थन करते है ।

'समाज उत्पीडक धर्म विप्लवी
स्वजाति का शत्रु दुरन्त पातकी ।'

हरिऔंध के 'वैदेही वनवास' महाकाव्य के नायक राम नीति पर महात्मा गाँधी के अहिंसावाद की छाप प्रतीत होती है ।

'दमन है मुझे कदापि न इष्ट
क्यों कि वह है भयमूलक नीति' ।

द्विवेदी – युग का रामचरित उपाध्याय कृत एक अन्य महाकाव्य 'रामचरित–चिंतामणि' सन १९२० में लिखा गया था जबकी गाँधीजी की भारत में धूम मच गई थी मैथिली शरण गुप्त म. गांधी से व्यक्तिगत रुपसे प्रभाविक थे उनके सर्वाधिक लोकप्रिय महाकाव्य 'साकेत' का लेखन सन १९१४ में शुरू होता है और उसकी परिसमाप्ति हुई सन १९३१ में इसप्रकार वह तिलक– युग एवं गाँधी युग तथा छायावाद युग का श्रेष्ठ आकलन है । 'साकेत' न केवल गाँधी चेतना से प्रभावित हुआ अपितु इसको लेकर गुप्त जी तथा गाँधी जी में प्रत्राचार हुआ था ।

गाँधी जी के समान गुप्त जी ने सन्तोषमय, सरल

ग्राम्य जीवन को पसंत किया है उनकी सीता गाँधीवादी चेतना में निमग्न नारी है वह ठीक कहती है ।

'औरों के हाथों यहाँ नही पलती हूँ,
अपने पैरों पर खडी आप चलती हूँ।

बालकृष्ण शर्मा नविन गाँधी जी के परम भक्त थे एक ओर वे अपने को 'गाँधी जी का गधा' कहते थे, तो दुसरी ओर 'बापू का सिपाही' 'नवीन' जी ने गाँधी जी पर अनेक कविताएँ लिखी है जिनमे उनके विषपायी रुपको प्रधानता दी है । 'नविन' जी ने अपने महाकाव्य 'उर्मिला' की इतिश्री सन १९३४ में की थी । इस पर गाँधी-चिंतन का व्यापक प्रभाव है । 'उर्मिला' के 'राम' गाँधी जी के लोकनायकत्व का प्रतिनिधित्त्व करते हैं ।

'राम, लोकनायक, मति – दायक
खर सायक – धर, जय – जय, है।'

'नवीन' जी के 'प्राणार्पण' नामक खंड – काव्य की कथावस्तु गाँधी – युग तथा गाँधी चेतना से प्रत्यक्ष संबंध रखती है । उसमे मनुष्यता तथा साम्प्रदायिक एकता के मुलमंत्र को काव्य का आवरण पहनाया गया है । सन १९३०-३१ के वर्ष के भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता – संग्राम की पूर्वपीठिका में कवि महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व को महिमा में बाँधता है ।

इस खडगधार – पथगामी ने क्या क्या न हमे वरदान दिए।
हम निबलो की खातिर इसने कितने – कितने विषपान किए।

रामधारी सिंह 'दिनकर' का राष्ट्रीय काव्य 'गाँधीवाद' की प्रतिक्रीया को वाणी प्रदान करता है । उनके प्रबंध-काव्य 'गाँधीवाद' की युद्ध समस्या का तार्किक विवेचन है । उनके प्रबंध काव्य 'कुरुक्षेत्र' में युध्द समस्या का तार्किक विवेचन है । इसमे धर्मराज युधिष्ठिर का चरित्र यदि गाँधीवाद के अनुकूल है, तो भीष्म पितामह का प्रतिकूल ।

एक आदर्श और यथार्थ का पुरस्कर्ता । युधिष्ठिर अहिंसा के प्रतिक है । वे रक्तपात तथा युद्ध को अनुचित कृत्य के रुप में ग्रहण करते है । युधिष्ठिर की गाँधीवादी प्रवृत्ती तथा ग्लानि को इन शब्दों में प्रकट किया गया है ।

कृष्ण कहते है, युद्ध अनघ है, किंतु,
मेरे प्राण जलते है, पल – पल परिताप से ।

सुभद्राकुमारी चौहान और डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' के काव्य साहित्य में गाँधी चिंतन के सुत्र बिखरे पडे है।

गाँधीवाद और हिंदी गद्य –

गद्य मे प्रेमचंदजी ने गाँधी युग तथा गाँधीवाद का प्रवेशद्वार खोला । प्रेमचंद गाँधी चिंतन के हामी होते हुए भी उसके अन्धानुगामी नही बन सके । प्रेमचंद साहित्य पर गाँधी दर्शन के प्रभूत प्रभावों को अनेक दृष्टीयों से निरखा-परखा जा सकता है ।

प्रेमचंद जी का कथन था, 'मैं गाँधी का बना बनाया कुदरती चेला हूँ ।' (सन १९२३), रंगभूमी (१९२५) कायाकल्प (१९२६) निर्मला (१९२७) गबन (१९३१) तथा कर्मभूमी (१९३२) उपन्यास सर्वथा गाँधी – युगीन रचनाएँ है । 'प्रेमाश्रम' में किसान समस्या का समाधान गाँधीवाद से स्पष्टतः प्रभावित है । उसका नायक गांधीवादी आदर्शोका परिचायक है । इस उपन्यास में ट्रस्टीशिप, हृदय-परिवर्तन, राम-राज शिक्षा पद्धती का विरोध, पश्चाप, नैतिकतावादी चरित्र आदि सभी कुछ, गाँधीवाद की उपज है । गाँधीवाद का परमोत्कर्ष 'रंगभूमी' में सिमट गया है । 'गबन' में गाँधी जी के स्वदेशी आंदोलन की एक झलक है । 'कर्म-भूमि' गाँधी जी को अलोकीत करता है । अछुतोद्धार की समस्या को व्यापकता मिली है । प्रेमचंद अपने पखर्ती लेखन में गाँधीवाद से युक्त हो रहे थे ।

प्रेमचंद के कहानी – साहित्य मे गाँधीवाद को प्रभावपूर्ण वाणी मिली है । 'जुलूस' एवं 'नमक का दरोगा' पूर्ण तथा गाँधीवादी कहानियाँ है । 'आहुति' ठाकूर का कुआँ आदि कहानियों में गाँधीवाद का व्यावहारीक पक्ष निहित है। 'प्रेम पच्चीसी' 'प्रेम प्रसून' 'प्रेम प्रमोद' 'पाँच फूल' 'समर यात्रा' आदि कहानी संग्रहों का सीधा संबंध गाँधी युग से रहा है । प्रेमचंद का उपन्यासकार कहानीकार की अपेक्षा गाँधीवादी तत्त्वों से अधिक प्रभावित हुआ है । प्रेमचंद के मानसपुत्र सूरदासविनय, चक्रधर, अमरकांत, प्रेमशंकर आदि गाँधीवाद की ध्वजा को संभाले हुए है ।

सियारामशरण गुप्त के कथा साहित्य ने गांधी – दर्शन को पूर्णतया ही ग्रहण किया है, इसीलिए डॉ. देवराज उपाध्याय ने लिखा है, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे है, कि सियारामशरण गुप्त के कथा – साहित्य पर गाँधीवाद के सत्य और अहिंसा का पूर्ण प्रभाव पड़ा है और प्रभाव का दर्शन उसके आंतरिक और बाह्य अर्थात विषय – निर्वाचन तथा बाह्य कलेवर दोनों में पाया जाता है । प्रेमचंद जी के उपन्यासों में भी सत्य और अहिंसा के प्रति इतनी गहरी आस्था नही दिखाई पडती । गाँधी जी के बाम से भारत के

राजनीतिक आंदोलन और उसकी उग्रता कुछ इस तरह संबंध हो गई है कि उन्हे हलचलों से अलग देखना कठिन हो जाता है । पर वास्तव मे वे संतोकी परंपरामें आते है । जीवन को सहज भाव से स्वीकार करने वाले, कही भी विरोध नहीं, कही भी निषेध नहीं, भारी से भारी विरोध को भी अपनी सहजता से हल देनेवाले । यह सहज भाव उपन्यास में देखना हों और आप मुझसे कहे कि हिंदी का कोई उपन्यास बतलाइए तो मैं सियारामशरण जी के उपन्यास की ओर संकेत करुंगा । प्रेमचंद की ओर नहीं, जैनेंन्द्र की ओर भी नहीं।

इसीप्रकार डॉ. नगेन्द्र भी कहते है, 'हिंदी मे मूलतः दो लेखक ऐसे है, जिन्होंने गाँधी दर्शन को गंभीरतापूर्वक ग्रहण किया है : जैनेंद्र ओरे सियारामशरण । इनमें से जैनेन्द्र की स्वीकृती एकांत बौध्दिक है, उनकी आत्मा गाँधी दर्शन के सात्विक प्रभाव को ग्रहण नहीं कर सकी है । पंत जी को गाँधीदर्शन शांत परिष्कृत पूर्णतः स्वीकार्य है, किंतु वे कदाचित उसमे अभीष्ट कला का अभाव पाते है, इसलिए अरविंद के प्रति उन्हे अधिक आकर्षण है परंतु सियारामशरण ने हृदय और बुद्धी दोनों का गाँधी दर्शन के साथ सामंजस्य कर लिया है । वह उनकी आत्मा में रम गया है ।'

हिंदी में जैनेंद्र गाँधीवादी तत्त्व चिंतक के रुप में विख्यात है। उन्होने गाँधीवाद को विशुद्ध बौद्धीक माध्यम से ग्रहण किया है। भगवती प्रसाद वाजपेयी की रचनाओं 'गुप्तधन', चलते-चलते, पतवार, मनुष्य का देवता, 'भूदान' आदिपर गाँधीतत्त्व चिंतन का स्पष्ट भाव है । 'पतवार' में पूर्णतया गाँधीवादी मूल स्वर है और उसका नायक 'दिलीप'गाँधीवाद के रस में निमग्न है ।

विष्णू प्रभाकर तथा अमृतलाल नागर की रचनाएँ भी गाँधीवाद से प्रभावित है । अनन्त गोपाल शेवडे को गाँधीवाद का साहित्यिक आख्यान माना गया है ।

सेठ गोविंददास पर छाया है । 'कर्ण' में अस्पृश्यता की चर्चा है । जाती-पाँति को थोथा माना गया है । सेठ जी के ऐतिहासिक नाटक भी इसी भावना के वशीभूत है। 'कुलीनता' तथा 'शशिगुप्त' मे गांधीवादी उदार दृष्टीकोन का प्रकारान्तर से विवेचन है । 'अशोक' मे अहिंसा की, मार्मिक व्याख्या है। 'विजय-बेली' 'सिंहलदीप' तथा 'चन्द्रापीड और चर्मकार' में गाँधी जी के अछुतोद्धार का प्रभाव दिखाई देता है । सामाजिक नाटकों में गाँधी जी के विचारों का प्रबलतम अभिव्यक्ती मिली है । 'विश्व-प्रेम' के पात्र गाँधीवाद के सच्चे प्रतिनिधी है । 'प्रकाश' में अहिंसात्मक आन्दोलन का बोलबाला है। 'भूदान-यज्ञ' में हृदय परिवर्तन को स्वर मिला है । 'सेवा-पथ' का नायक दीनानाथ गाँधीवाद का सच्चा प्रतिरुप है । सेठ जी के समस्यामूलक नाटक गाँधीजीकी आध्यात्मिक भाव - प्रवणता से परिव्याज है । 'त्याग का ग्रहण' का नायक धर्मध्वज गाँधीजी का शिष्य है । 'संतोष कहाँ' में गांधीवादी जीवन पध्दती का पोषण है । 'दुःख क्यों' में महात्मा गाँधी के असहयोग आंदोलन के वातावरण को चिंतन है । 'गरीबी या अमीरी' और 'महत्त्व किसे' में संपत्ती - त्याग की महत्ता है। सेठ जी के प्रतीक - नाटक 'नवरस' और 'विकास' में युद्ध की निस्सारता तथा सर्वधर्म - समन्वय पर बल दिया गया है।

इसी प्रकार डॉ. रामकुमार वर्मा, उदयशंकर भट्ट, जगदीशचंद्र माथुर आदि के एकांकियो में गाँधीवाद का पुट है । हिंदी साहित्य की प्रायःप्रत्येक विधा पर गाँधीवाद का प्रभाव देखा जा सकता है ।

उमरेश बहादूसिंह 'अवधेश' ने 'देवता मेरे देश का' नामक एक बृहत उपन्यास लिखा है जिसके नायक महात्मा गांधी है । जिसके छह खंड है, जो कि गाँधी जी की विचारधारा तथा दर्शन पर आधारित है । इसी प्रकार पद्य में 'बापू की वाणी' नामक पुस्तीका में, निरंकार देव सेवक ने गाँधी जी के सिद्धांतो को जन - जन तक पहुँचाने का प्रयत्न किया है ।

गाँधी जी पर संस्मरण जीवनी, रेखाचित्र, यात्रा वृत्तान्त आदि के रुप में पुष्कल साहित्य मिलता है जिनमें 'गाँधी पुराण' तथा गाँधी वाड़मय का विशेष महत्त्व है।

निष्कर्ष -

गाँधीजी हमारे देश तथा साहित्य के संस्कार बन चुके है । उनकी विचारधारा नें साहित्य को सागर का स्वरुप प्रदान किया । वे विराट पुरुष थे, इसीलिए साहित्य ने भी उनकी विराटता को अमरत्व प्रदान किया ।

* * *

प्रेमचंद के उपन्यासों में दलित विमर्श

प्रा. गोरख बी. इदे
(हिंदी विभाग)

जब हम दलित विमर्श के आलोक में प्रेमचंद के उपन्यासों पर दृष्टिपात करते हैं तो पाते है कि उसके विस्तृत कैनवास में भारतीय समाज का हर एक अंग उपस्थित है । इन उपन्यासों में धर्म से पिडित, समाज द्वारा उपेक्षित गांव के सीमांत पर फेंका गया कथित अछूत समाज रोटी, कपडा, मकान के लिए तडपता मजदूर वर्ग तथा जीवन की तमाम सुविधाओं से वंचित युगों से पददलित वर्ग दिखाई देगा ।

प्रेमचंदजी ने अपने उपन्यासों में शुद्र, अछूत, धोबी, चमार, भंगी, तथा निम्नवर्ग जैसे शब्दों का सहज रुप में प्रयोग किया है । उन्हें मानव द्वारा मानव का शोषण किसी भी स्थिति में स्वीकार्य नहीं था । उनका मानना था कि, हमारे समाज का बहुत बड़ा भाग अछूत तथा निम्नवर्ग है । हमारी व्यवस्था ने उन्हें जीवनभर रौंदा, कुचला और दला है, अब हमारे प्रायश्चित का समय आ गया है। प्रेमचंद की 'कर्मभूमि' उपन्यास मंदिरों में अछूतों को लेकर होनेवाले संघर्ष की अमीर गाथा है । यहाँ धोबी, नाई और मेहतर वर्ग के सदियों से चले आ रहे सामाजिक संताप का सविस्तर चित्रण है । यहाँ प्रेमचंद अछूतपन की समस्या पर विचार करने के लिए किसी दलित पात्र को प्रत्यक्ष तौर पर पेश करके वे ऐसे प्रसंग की उद्‌भावना करते हैं, जहाँ रामायण की रसप्रद कथा का लाभ लेने के लिए सवर्णों के जूते उतारने की जगह पर कुछ अछूत लोग सिमटकर आ बैठते हैं । जब इसका पता ठाकूर के द्वारा ब्रह्मचारी को चला, तो उसने अछूतों को गालियाँ देना शुरू किया और श्रोताओं ने उन दीन-हीन हाथ जोड़कर क्षमा माँगते हुए अछूतों को जूतों से खूप मारा-पीटा । इस प्रसंग की उद्‌भावना के पिछे प्रेमचंद का आशय वर्ण-व्यवस्था के अमानवीय चेहरे को बेनकाब करना है । वे तथाकथित अछूत वर्ग का वास्तव परिचित कराकर उसकी समूची पीड़ा और गूंगी सच्चाई को प्रकट करते हैं ।

'गोदान' में प्रेमचंद दलित समुदाय की सामाजिक ताकद की सही परख करते हैं उसके हरिजन यहाँ विद्रोही तेवर लेकर आर्थिक और सामाजिक शोषण करते है। प्रेमचंद यहाँ जाति संघर्ष का मंगलाचरण प्रस्तुत करते हुए दिखाते हैं कि गांव के चमार, महाजन दाताहिन के पुत्र मातादीन को पकडकर उसके मुँह में गाय की हड्डी का टुकडा डालते हैं। उसे जबरन चमार बनाने का उपक्रम करते हैं, क्योंकि सिलिया चमारिन से अवैध संबंध स्थापित करके उसे छोड़ दिया है। सिलिया की माँ मातादीन को फटकारते हुए कहती है, ''हम चमार हैं, इसलिए हमारी कोई इज्जत नहीं, तुम बड़े नेमी-धर्मी हो। उसके साथ सोयोगे लेकिन हाथ का पानी न पियोगे।'' यहाँ प्रेमचंद दलित महिला की त्रासदी को गहराते हैं, सामंती समाज में यह तो आम बात थी कि सवर्ण पुरुष किसी दलित स्त्री के साथ सहज ही शारीरिक संबंध बना ले । परिणाम स्वरुप गालियों के प्रयोग द्वारा गरीबों की सामाजिक असंतोष की ज्वाला को प्रेमचंद दिखाते है ।

इन उपन्यासों के साथ-साथ 'रंगभूमि' में चमार जाति की, समस्याओंपर प्रकाश डाला है। 'कायाकल्प' का बूढा चौधरी और 'प्रेमाश्रम' उपन्यास से दलित समाज का चित्रण और उनकी समस्याओं को उजागर किया है। कुल मिलाकर हम यह कह सकते हैं कि प्रेमचंद के उपन्यास दलित विमर्श की आवश्यक पीठिका तैयार करते है। राजनीतिक पैंतरेबाजी के बजाय दलित अस्मिता को बिना किसी भेदभाव के उभारते हैं। यदि वे और कुछ समय तक जीवित रहते तो यह भी संभव था कि वें स्वयं ही दलित विमर्श को व्यापक भावभूमि और जनोन्मुखता प्रदान करते। निश्चित ही आज दलित लेखकों द्वारा अपने अस्मिता स्थापन और खोए हुए स्वत्व को हासिल करने के लिए जानेवाले संघर्ष में प्रेमचंद का लेखन दिशा और दृष्टि देने में समर्थ है।

* * *

हिंदी साहित्य, सिनेमा और समाज

प्रा. एस.डी. गावंडे
(हिंदी विभाग)

साहित्य और सिनेमा ऐसे माध्यम हैं जिसमें समाज को बदलने की ताकत सबसे अधिक होती है । कहना गलत न होगा कि सिनेमा, साहित्य से अधिक प्रभावशाली और आम जनता तक सरलता से पहुँचने वाला माध्यम है । हालांकि, साहित्य के चिंतक, लेखक और आलोचक सिनेमा को साहित्य का हिस्सा मानने से हमेशा हिचकते रहे हैं । यह जानते हुए भी कि सिनेमा का आरंभ ही साहित्य से होता है । साहित्य और सिनेमा कहीं ना कहीं हमेशा ही एक दूसरे के विस्तार में सह्योग करते रहें हैं । कहना सर्वथा उचित होगा कि साहित्य और सिनेमा एक दूसरे के पूरक हैं । भारत में बनने वाली पहली फीचर फिल्म भी आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक भारतेंन्दू हरिश्चंद्र के नाटक 'हरिश्चंद्र' से प्रेरीत थी ।

प्रारंभ से ही हिंदी सिनेमा में लिखित और अलिखित साहित्य की भूमिका अहंम रही है । आज भारत में फिल्म उद्योग ने सौ साल का सफर तय कर लिया है । भारत जैसे बहुभाषी और बहु-सांस्कृतिक परंपरावाले देश में इसकी व्यापक पहुंच ने इसे लागों के मनोरंजन का सर्वाधिक लोकप्रिय माध्यम बना दिया है और इसमें हिंदी का व्यापक योगदान है । १९३१ में पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' से आज तक सर्वाधिक फिल्मे हिंदी भाषा में ही बनाई गई । इस तरह हिंदी भारत ही नहीं भारत के मुख्य सिनेमा की भी भाषा है । विश्व में हिंदी सिनेमा ही भारतीय सिनेमा का प्रतिनिधित्व करता है । अक्सर जब हम हिंदी सिनेमा में साहित्य के योगदान की बात करते है तो इसे लिखित साहित्य से जोड़ देते है । जब कि साहित्य चाहे लिखित हो या अलिखित वह हमेशा से समाज को प्रभावित करता रहता है । प्रारंभ में बोलती फिल्मों का शुरुआती दौर पारसी थिएटर की विरासत पर था। जिसमें अति नाटकीयता और गीत-संगीत का ज्यादा समावेश था। पहली बार हिंदी सिनेमा में स्थापित लेखक के रुप में कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद का प्रवेश हुआ ।

१९३३ में हिंदी के सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यकार प्रेमचंद की कहानी पर मोहन भावनानी के निर्देशन में फिल्म 'मिल मजदूर' बनी । निर्देशक ने मूल कहानी बदलाव किए । जो प्रेमचंद को पसंद नहीं आए । १९३४ में प्रेमचंद की ही कृतियोंपर 'नवजीवन' और 'सेवासदन' फिल्म बनी लेकिन दोनों प्लॉप हो गई । बाद में भगवतीचरण वर्मा, पांडेय बेचन शर्मा, फणीश्वरनाथ रेणू, अमृतलाल नागर, चतुरसेन शास्त्री आदि साहित्यकारों का सुनहरा दौर सातवें दशक में नजर आता है । जिसमें उपन्यासकार कमलेश्वर का मुख्य योगदान है । गुलजार ने कमलेश्वर की कृति पर 'आँधी' और 'मौसम' बनाई। सातवें दशक में जहाँ एक ओर हिंदी कथा - सहित्य में बदलाव आ रहा था वहीं हिंदी भाषी फिल्मकारों की संख्या बढ रही थी । बाद में बांग्ला भाषी बासु चटर्जी ने मन्नु भण्डारी की कहानी 'यही सच' पर 'रजनी गंधा' बनाई जो काफी लोकप्रिय हुई । इसी दौर में हिंदी साहित्य को सबसे ज्यादा महत्त्व और निम्नभरी समज मणि कौल ने दी जिन्होंने मोहन राकेश, मुक्तिबोध और विनोद कुमार शुक्ल की रचनाओंपर फिल्में बनाई।

साहित्य और सिनेमा के रिश्ते को जोडे रखने में दूरदर्शन की बड़ी भूमिका रही है। इसमें तमस, चंद्रकांता,

राग दरबारी, कब तक पुकारु, मुझे चाँद चाहिए जैसे धारावाहिक हिट रहे। हिंदी सिनेमा का वर्तमान परिदृश्य काफी बदल चूका है। सिनेमा में हिंदी साहित्य पर आधारित अधिकांश फिल्मों का सफर बहुत आसान नहीं था। यही कारण है कि हिंदी में साहित्य कृतियोंपर सबसे कम सफल फिल्में बन पाई है। दूसरा बड़ा कारण सिनेमा का उपन्यास की भाँती पेश करना था। फिल्म शब्दों का दृश्य विधा में 'अनुवाद' नहीं हो सकता। जबकि साहित्य जगत फिल्म में भी साहित्य को जैसा की तैसा देखना चाहता है। हम सभी जानते है कि भारतीय दर्शक वर्ग हिंदी सिनेमा को उसकी कल्पनाशीलता, रोमांटिसिजम् के कारण ज्यादा पसंद करता है। हिंदी सिनेमा की अखिल भारतीय पहुँच बनाने में हिंदी के साहित्यिक स्वरुप के अलावा इसके कौन से स्वरुप का ज्यादा योगदान है।

राष्ट्रभाषा, जनभाषा, संपर्कभाषा या राजभाषा? सहज जबाब है जनभाषा । जो हिंदी कभी भारतीय सिनेमा का प्राणतत्त्व मानी जाती थी उसका स्थान आज खिचडी भाषा या हिंग्लिश ने ले लिया है । शुरू से ही भारतीय समाज में साहित्य की प्रखर भूमिका रही है । भाषा का समाज के बिना कोई अस्तित्व नहीं होता । भाषा से किसी व्यक्ति और समाज का रिश्ता उसके अस्तित्व से गुंथा हुआ है । भाषा उन्नत वही जो समाज उन्नति की राह पर है । हमने रामायण, महाभारत, पंचतंत्र जैसी गाथाओं को मौखिक रुप से संरक्षित रखा । आज भी हमारे देश में हजारों सालों की लोकोक्तियाँ, मुँहावरे जिंदा है, क्योंकि हमारा देश श्रुति परंपराओं का है । भारतीय सिनेमा ने भी प्रारंभ में इन्ही परंपराओं, किस्सों-कहानीयोंपर फिल्में बनाने की परंपरा कायम रखी । इसलिएँ साहित्य की प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष भूमिका प्रारंभ से ही रही है ।

हिंदी सिनेमा को शिखर परले जाने वाले साहित्य को पुष्पित-पल्लवित करना जरुरी है । आज हिंदी फिल्में , हिंदी भाषा साहित्य और संस्कृति का लोकदूत बनकर विश्वस्तर पर हिंदी की पताका फहरा रही है । ऐसे में जरुरत है इसकी पुर्नव्याख्या करने की । तभी हिंदी सिनेमा कुछ नकारात्मकता के बाद भी अपने मजबूत सकारात्मक पक्षों के बल पर अपनी खोई हुई विरासत को पा सकेगा और अपनी जडों को सिंचित कर पाएगा । इसके लिए कलमकारों को भी अपनी कलम से उस ओर मोडने की जरुरत है, जहाँ भारतीय समाज उठता -जागता है। कलमकारों को फिर अपनी कलम उस ग्रामीण समाज की ओर मोडनी होगी जहाँ आज भी बहुसंख्यांक समाज रहता है। तभी हिंदी भाषा और साहित्य के संबंधो से भारतीय सिनेमा नया आकार ले पाएगा।

* * *

जिन्दगी करीब से देखने में एक त्रासदी है ।
लेकिन दूर से देखने पर एक कॉमेडी है ।
– चार्ली चॅपलीन

मैं ऐसे धर्म को मानता हूँ जो स्वतंत्रता, समानता और भाई – चारा सिखाए ।
– डॉ.बी. आर. आंबेडकर

मैं हर एक वस्तु में हूँ और उससे परे भी ।
मैं सभी रिक्त स्थान को भरता हूँ ।
– साईबाबा

दोस्ती

कु. गायत्री भाऊसाहेब शिर्के
(एफ.वाय.बी.कॉम)

''सिर्फ 'मोहब्बत' ही नही दुनिया में जो 'दर्द' के लिए जिम्मेदार है, कमबख्त 'दोस्ती' भी बहुत तकलीफ देती है अगर दिल से हो जाये तो ।''

'दोस्ती' के बारे में अक्सर ऐसा कहा जाता हैं । क्योंकि दोस्ती अनमोल रिश्ता होता है । जिसमें विश्वास और प्यार होता है । क्योंकि इस दुनिया में कई ऐसे लोग होते है, जो दोस्ती के लिए तरस जाते हैं । दोस्ती वही होती है, जो दुसरों को भी जीना सिखाती है ।

'दोस्ती' से लोग समाज में अपनी एक पहचान बनाते है। मनुष्य की जिंदगी में कुछ ऐसी भयावह परिस्थितीयाँ आती है, जिसमें मनुष्य दोस्ती से उनका हल निकाल लेता है। 'दोस्ती' इस शब्द के बारे में हम कितना भी कहे तो कम ही हैं ।

दोस्ती वह होती है, जो समय आने पर अपने दोस्तों के लिए जान भी देती हैं । दोस्ती ऐसी होनी चाहिए जो हमेशा जिंदा रहनी चाहिए । उसमें एक दोस्त ने दुसरे दोस्त के मन की भावनाएँ समझनी चाहिए । दोस्ती में हर तरह के दोस्तों की जरुरत होती है और इस दुनिया में बहुत सारे रिश्ते होते हैं । जो सबसे अनमोल और महत्त्वपूर्ण हैं । इसलिए दोस्ती के बारे में एक गाना प्रसिद्ध है।

''ये दोस्ती हम नहीं तोडेंगे, तोडेंगे दम मगर तेरा साथ ना छोड़ेंगे''... दुनिया में सबसे बड़ा और 'पवित्र रिश्ता' दोस्ती का हैं।

इस तरह से हम दोस्ती के बारे में कहते हैं और हमेशा सुनते रहते है । इसलिए हमें इस दोस्ती के रिश्ते को बनाएँ रखना चाहिए। 'दोस्ती' के बारे में कहा जाता है ।

''जरुरत के खातीर
बनते थे शायद रिश्ते
कभी हँसाते हैं, तो कभी रुलाते हें ।
कभी पहचान बनाते है तो,
कभी अजनबी बनाते हैं ये रिश्ते,
अपनों की भीड़ को भी
कभी बेगाना बनाते हैं ये रिश्ते ।।''

इस तरह दोस्ती के बारे में कितना भी कहा जाए तो कम है । यह भविष्य काल में भी हमेशा बरकरार रहेगा ।

दोस्ती के बारे में एक और शायरी प्रसिद्ध है –

''प्यार करनेवाले परेशान हो जाते है,
शादी करनेवाले शराबी हो जाते है,
तलाक देनेवाले देवदास हो जाते है,
दोस्ती करनेवाले 'दिलवाले' हो जाते है ।''

इस तरह से हम रिश्तों के बारे में कहे तो, 'दोस्ती' का रिश्ता बहुत ही अनमोल है। और हमें इसे बहुत ही संभालकर रखना चाहिए ।

* * *

एक थी लड़की

कु. गायत्री भाऊसाहेब शिर्के
(एफ.वाय.बी.कॉम)

एक लड़की थी... बहुत ही प्यारी-सी थी...
सबसे अलग उसकी भी एक दुनिया थी...
थोडी अलग उसकी भी एक दुनिया थी...
थोड़ी अलग तो थी, पर शायद उसमें
कुछ तो बात थी...
थोडीसी अकड़ू थी, शैतान थी,
पर दिल को छू जाती थी...
थी एक लड़की, जो सपनों की परियों से,
भी ज्यादा ही खूबसूरत थी...
उनका रुप और चेहरे की हँसी
सारी तकलीफे दूर करती थी...
दिल चाहता था कि, वह पास आएँ...
ऐसी थी वह लड़की,
जिससे मैं मन ही मन प्यार करता था,
उसकी एक झलक के लिए
दिन रात यूँही भटकता था...
पर वो मिलने पर, कभी भी उसे अपनी
दिल की बात नहीं बता पाता था...
बहुत हिम्मत जुटाकर उसे अपनी दिल
की बात कहनेवाला था... कि मैं तुम्हें
जी जान से चाहता हूँ... पर अफसोस
मुझे देर हो गई शायद... मेरे कहने से
पहले ही कोई और उसे ले गया
और मैं सिर्फ रोता रहा... रोता रहा ।
आज भी सोचता हूँ, कि कैसी होगी
वह... क्या जैसे पहले थी, वैसे ही,
या उससे और भी ज्यादा खूबसूरत ।
पर, अब सोचने से क्या फायदा...
सिर्फ एक ही ख्याल मन में आता है...
एक थी लडकी... जिसे मै प्यार करता था
खुद से भी ज्यादा...।

* * *

अच्छे दिन आते है ।

तुषार दत्तात्रय ढोले
(एफ.वाय.बी.एस्सी)

जीवनमयी इस रास्ते पर
बुरा वक्त पहले से ही था
निड़र हुए आगे बढ़ा तो
अच्छा दिन दिख रहा था

बुरा वक्त जीवन के हर मोड़
पर सामनेही खड़ा था
फिर भी हमने जिना नही छोड़ा
आगे सफलता का दिया था

सुख-दुःख के इस जीवन में
बन बैठे वक्त के गुलाम,
अच्छा कौन और बुरा कौन
न समझ अपनों से हार बैठे

माना कि यातनाएँ बहुत है
हमारे इस जीवन में,
पर याद रखों, यातनाओं से
लढकर जीवन सफल होता है ।

अपने ना होकर भी
जो हमे साथ देते है
उनके साथ, हमारे भी
कभी ना कभी 'अच्छे दिन आते है'

* * *

कहानी जिन्दगी की

कु. आश्विनी प्रभाकर मंडलिक
(एफ.वाय.बी.कॉम.)

कैसी हैं यह जिंदगी ?
न चलती है किसी के बिना,
न रुकती है किसी के लिए ।
मुश्कील हो जाते है; पर नामुमकीन तो नही जीना,
कुछ लोगों के बिना, साथ छोड जाते है वो,
तो लगता है रुक सी गई है, साँसे उनके बिना ।
मुश्कील हो जाता है उन्हें भुला देना ।
लगता है जिंदगी थम गई हो उनके बिना ।
पर जिंदगी तो रुकती नही है, किसी के लिए ।
हमारी ये कहानी है सबके लिए ।

* * *

जीवन की लड़ाई ।

तुषार दत्तात्रय ढोले
(एफ.वाय.बी.एस्सी.)

पैदा हुआ तब
अस्तित्व की लड़ाई,
बड़ा होनेपर भी
जिने की लड़ाई

हर प्रयास में ही
जीत हासिल करने,
के लिए मन की
आत्मसम्मान से लड़ाई

अगर जीत हासिल,
नही हुई तो;
हौसले बुलंद करके,
हार अपनाने में लड़ाई

आखिर हार अपनाना भी
हमे आना चाहिए,
मन की हृदय से
एक लड़ाई है ।

मौत से लड़ते लड़ते
जिनको जीवन मिला है
उनके लिए जीवन भी,
एक लड़ाई है ।

पर यह लड़ाई है
हमारे सम्मान की,
और हमारे विजय की ।

* * *

शिक्षक

कु. सलमा हसन सय्यद
(१२ वी कला)

रोज सुबह मिलते है इनसे,
क्या हमको करना है ये बतलाते हैं ।
लेके तस्वीरे इन्सानों की
सही गलत का भेद हमें ये बतलाते हैं ।
कभी डाँट तो कभी प्यार से,
कितना कुछ ये समझाते हैं ।
है भविष्य देश का जिनमें
उनका सबका भविष्य ये बनाते हैं ।
है कई रंग इस जीवन के
रंगो की दुनिया से पहचान, ये करवाते हैं ।
खो न जाएँ भीड़ में कही हम,
हमको हमसे ही ये मिलवाते हैं ।
हार कर फिर लड़ना ही जीत है सच्ची,
ऐसा ऐहसास ये करवाते हैं ।
कोशिश करते रहना हर पल, जीवन का अर्थ हमें ।
ये बतलाते हैं ।
देते है नेक मंजिले भी हमें,
राह भी ये दिखलाते हैं ।
देते है ज्ञान जीवन का काम यहीं सब हैं इनका,
ये ''शिक्षक'' कहलाते हैं ।

* * *

आकाश की तुलना मानव से

तुषार दत्तात्रय ढोले
(एफ.वाय.बी.एस्सी.)

है तारों की, दुनिया अलग
रहकर अपने कार्य मे सजग
दे रहे है प्रकाश दुनिया को
और सुख की अनुभूति हमको ।

सुरज दिन को प्रकाशमय करता है,
और चाँदनी रात झगमगाती है,
देकर संवेराँ मनुष्य को,
बनाते सुखकर मानव जीवन को ।

तारों की एकता देखी,
पृथ्वी को झगमगाने में,
देखा नही तारों को कभी झगडते,
मानव तो हरवक्त झगड़ता है ।

उपर आकाश की दुनिया,
और निचे मनुष्य की,
आकाश का है स्वयं पर नियंत्रण,
मगर मनुष्य अपना नियंत्रण खो चुका है ।

लेकर आदर्श आकाश जगत का,
मनुष्य को बदलना होगा,
करके प्रयास बदलनेका,
हिंदूस्थान को बदलना होगा ।

* * *

क्रीडा विभाग- वरिष्ठ महाविद्यालय

संचालक, शारीरिक शिक्षण

प्रा.डॉ.राहुल भोसले

आंतरविभागीय सॉफ्टबॉल स्पर्धा विजयी संघ,
अहमदनगर संघात निवड व सहभाग

आंतरमहाविद्यालयीन हॅण्डबॉल व नेटबॉल स्पर्धा उपविजेत्या,
आंतरविभागीय मैदानी व नेटबॉल स्पर्धा, अहमदनगर संघात निवड

आंतरविभागीय हॅण्डबॉल स्पर्धा, अहमदनगर संघात निवड

आंतरविभागीय नेटबॉल स्पर्धा, अहमदनगर संघात निवड

आंतरमहाविद्यालयीन हॅण्डबॉल व नेटबॉल स्पर्धा उपविजेते

आंतरविभागीय खो-खो स्पर्धा, अहमदनगर संघात निवड

आंतरविभागीय खो-खो स्पर्धा, अहमदनगर संघात निवड

आंतरमहाविद्यालयीन शरीरसौष्ठव स्पर्धा विजेता व आंतरविभागीय स्पर्धेसाठी अहमदनगर संघात निवड

आंतरराष्ट्रीय रोप मल्लखांब स्पर्धा श्रीलंका निवड. आंतरमहाविद्यालय रोपमल्लखांब स्पर्धा विजेती व आंतरविभागीय स्पर्धेसाठी अहमदनगर संघातून निवड

आंतरमहाविद्यालयीन मैदानी स्पर्धा विजेत्या व आंतरविभागीय मैदानी स्पर्धेसाठी अहमदनगर संघातून निवड

आंतरमहाविद्यालयीन हँडबॉल स्पर्धा उपविजेता संघ

आंतरविभागीय हँडबॉल स्पर्धा अहमदनगर संघात निवड

आंतरविभागीय बॅडमिंग्टन स्पर्धा अहमदनगर संघात निवड

खुली राज्यस्तरीय रस्सीखेच स्पर्धा अहमदनगर संघात निवड

खुल्या जिल्हास्तरीय सॉफ्टबॉल स्पर्धा अहमदनगर संघात निवड

क्रीडा विभाग- कनिष्ठ महाविद्यालय

क्रीडा विभाग प्रमुख

प्रा. नंदलाल काळण

क्रीडा सहशिक्षक

प्रा. योगेश उगले

जिमखाना प्रतिनिधी

पोखरकर अभिषेक सदानंद

कु. साक्षी डावरे

बालेवाडी, पुणे राष्ट्रीय शालेय थाय बॉक्सिंग स्पर्धा सहभाग, राज्यस्तरीय शालेय कराटे स्पर्धा, नांदेड- ब्रॉंझपदक, राज्यस्तरीय तायक्वोंदो स्पर्धा बालेवाडी, पुणे - रौप्यपदक, राज्यस्तरीय बेसबॉल स्पर्धा, परभणी सहभाग

कु. गोंदके श्वेता जयराम

राष्ट्रीय टग ऑफ वॉर स्पर्धा, कोल्हापूर-रौप्य पदक

कु. प्रतिक्षा रमाकांत चौधरी

राष्ट्रीय बेसबॉल स्पर्धा, आंध्रप्रदेश-रौप्यपदक

कु. काजल राजेंद्र ताजणे

राज्यस्तरीय योग व रोप मल्लखांब स्पर्धा, वर्धा व मुंबई सहभाग, अहमदनगर जिल्हा संघ निवड

राज्यस्तरीय टग ऑफ वॉर, नांदेड सहभाग व अहमदनगर जिल्हा संघ निवड

गुंजाळ प्रविण ज्ञानेश्वर

वाडेकर विशाल तानाजी

गिरी शाम विकास

सारोक्ते आकाश खंडू

धुमाळ सत्यम शंकर

कु. नियनिता सराफजी गुरखा

राज्यस्तरीय तायक्वोंदो स्पर्धा बालेवाडी, पुणे-ब्रॉंझपदक

कु. सुप्रिया गोरक्षनाथ वाकचौरे

राज्यस्तरीय तायक्वोंदो स्पर्धा बालेवाडी, पुणे-सहभाग

देसाई राहुल सुरेश

राज्यस्तरीय बेसबॉल स्पर्धा परभणी - सहभाग

माने सौरभ हरिदास

राज्यस्तरीय बेसबॉल स्पर्धा परभणी - सहभाग

धुमाळ यशोदीप शिवाजी

राज्यस्तरीय बेसबॉल स्पर्धा परभणी - सहभाग

राज्यस्तरीय बेस बॉल स्पर्धा, परभणी – सहभाग

कु. वैष्णवी नवनाथ परभणे

कु.सृष्टी राजेश देशमुख

कु.आश्विनी एकनाथ अस्वले

कु. गीतांजली अर्जुन भुसारी

जिल्हास्तरीय सॉफ्टबॉल स्पर्धा, शेवगांव – विजयी संघ, समवेत संस्थेचे अध्यक्ष मा. जे. डी. आंबरे, सचिव मा. यशवंतराव आभाळे, प्राचार्य डॉ. एस.बी. ताकटे, उपप्राचार्य प्रा. प्रकाश जगताप, पर्यवेक्षक प्रा.डॉ. सुनील शिंदे

जिल्हास्तरीय बेसबॉल स्पर्धा, शेवगांव – विजयी संघ

पोलिस भरती पूर्व प्रशिक्षण अॅकेडमी (क.महाविद्यालय) मार्गदर्शन करताना
जिल्हा क्रीडा अधिकारी मा.श्री. जोशी साहेब व क्रीडा अधिकारी मा.श्री.नंदकुमार रासने

जिल्हास्तरीय रिंग टेनिस स्पर्धा – उद्घाटन करतांना
संस्थेचे सचिव मा.यशवंतराव आभाळे समवेत इतर मान्यवर

जिल्हास्तरीय रिंग टेनिस स्पर्धा – उद्घाटन प्रसंगी
संस्थेचे सचिव मा.यशवंतराव आभाळे मार्गदर्शन करताना

राष्ट्रीय सेवा योजना
(वरिष्ठ महाविद्यालय)

राष्ट्रीय सेवा योजना
(वरिष्ठ महाविद्यालय)

कार्यक्रम अधिकारी

प्रा.डॉ. सुनिल मोहटे

मतदार जागृती अभियान रॅलीमध्ये सहभागी स्वयंसेवक

जन जागृती अभियान रॅलीमध्ये सहभागी स्वयंसेवक

रक्तदान करताना स्वयंसेवक व कार्यक्रम अधिकारी

वृक्षारोपण करताना शिक्षण सहसंचालक पुणे विभाग
मा.डॉ. विजय नारखेडे व इतर मान्यवर

विशेष हिवाळी शिबीर, कुंभेफळ येथे श्रमदान करताना रा.से.यो. स्वयंसेवक

विशेष हिवाळी शिबीर, कुंभेफळ येथे स्वच्छता अभियानात सहभागी
रा.से.यो. स्वयंसेवक

'गणेशमूर्ती व निर्माल्यदान' उपक्रमात सहभागी रा.से.यो. स्वयंसेवक,
कार्यक्रम अधिकारी व अकोले पोलिस निरीक्षक

रा.से.यो. दिवसाचे उद्घाटन करताना प्रा. सुरेश मालुंजकर
व इतर मान्यवर

राष्ट्रीय सेवा योजना
(कनिष्ठ महाविद्यालय)

राष्ट्रीय सेवा योजना
(कनिष्ठ महाविद्यालय)

कार्यक्रम अधिकारी

प्रा. शावरसिद्ध बिराजदार

प्रतिनिधी

कु. वैशाली विनायक केदार

विशेष हिवाळी शिबीर, म्हाळादेवी येथे वनराई बंधारा तयार करताना रा.से.यो. स्वयंसेवक

विशेष हिवाळी शिबीर, म्हाळादेवी येथे स्वच्छता अभियान राबविताना रा.से.यो. स्वयंसेवक

'गणेशमूर्ती व निर्माल्यदान' उपक्रमात सहभागी रा.से.यो. स्वयंसेवक

नियमित उपक्रम अंतर्गत महाविद्यालय परिसर साफ-सफाई करताना रा.से.यो. स्वयंसेवक

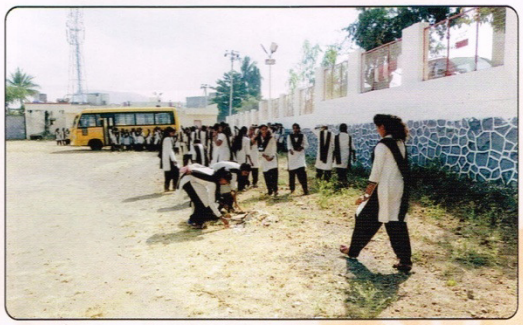

महाविद्यालय परिसराची स्वच्छता करताना रा.से.यो. स्वयंसेवक

विविध गुणदर्शन - कनिष्ठ महाविद्यालय

राहुल देसाई व समूह

कु. कांचन जोरवर व ऋषिकेश मालुंजकर

कु. निकिता वाकचौरे व समूह

कु. कोमल शिंदे व समूह

कु. श्रेया शिरसाठ व कु. आरती वालझाडे

विविध गुणदर्शन - वरिष्ठ महाविद्यालय

समूह नृत्य

समूह नृत्य

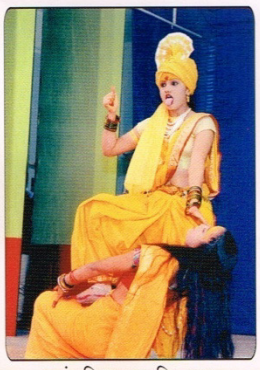

प्रशंसनिय नृत्याविष्कार

कु. कांचन जोरवर

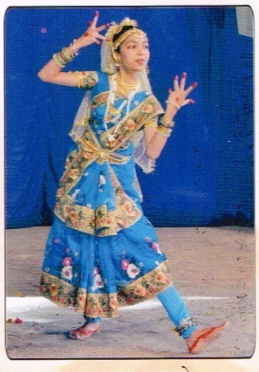

कु. श्रद्धा साळवे

तीन अंकी नाटक – 'श्रीमंत दामोदर पंत'

नाटकातील काही बोलके प्रसंग

पारितोषिक वितरण समारंभ

विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन करताना प्रसिद्ध कवी मा. फ. मु. शिंदे

कु. ज्योती बाळासाहेब राक्षे हिस 'स्टुडंट ऑफ द ईयर' (वरिष्ठ महाविद्यालय) पारितोषिकाने सन्मानित करताना प्रमुख पाहुणे मा.श्री. फ. मु. शिंदे

कु. काजल राजेंद्र ताजणे हिस 'स्टुडंट ऑफ द ईयर' (कनिष्ठ महाविद्यालय) पारितोषिकाने सन्मानित करताना प्रमुख पाहुणे मा.श्री. फ. मु. शिंदे